THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 1 January- March: 2026

"ग्रामीण एवं शहरी किशोर-किशोरियों में तार्किक चिन्तन योग्यता एवं समस्या समाधान योग्यता में सहसम्बंध का अध्ययन।"

जय प्रकाश
(पीएच.डी. शोधार्थी)
टांटिया विश्वविद्यालय, श्री गंगानगर।

डा॰. पूर्णिमा शर्मा
असिस्टंेट प्रोफेसर, टांटिया विश्वविद्यालय
श्री गंगानगर।

सारांश

यह शोध ग्रामीण एवं शहरी किशोर-किशोरियों में तार्किक चिन्तन योग्यता तथा समस्या समाधान योग्यता में सहसम्बंध का अध्ययन करने के उद्देश्य से किया गया है। वर्तमान में समस्या समाधान की क्षमता किशोरों के बौद्धिक एवं शैक्षिक विकास के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी जाती है। सामाजिक, शैक्षिक तथा पर्यावरणीय परिस्थितियों के कारण ग्रामीण एवं शहरी परिवेश में रहने वाले किशोर-किशोरियों के बौद्धिक विकास तथा ससम्बंध में अन्तर होने की सम्भावना रहती है। इस अध्ययन मंे सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है तथा नमूने के रूप में ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के कुल 600 किशोर-किशोरियों जिसमें 300 ग्रामीण तथा 300 शहरी क्षेत्र से चुनाव यादृच्छिक नमूना विधि द्वारा किया गया है। शोध में तार्किक चिन्तन योग्यता के लिए डा॰. सुरजीत कुमार एवं डा॰. शीखा तिवारी तथा समस्या समाधान योग्यता हेतु एल. एन. दुब्बे के मानकीकृत मनोवैज्ञानिक परीक्षणों का प्रयोग किया गया है। प्राप्त आँकड़ों का विश्लेषण माध्य, माध्य विचलन, तथा स्पीयरमैन का सहसम्बंध गुणांक द्वारा किया गया है।

प्रस्तावनाः

किशोरावस्था मानसिक विकास का महत्वपूर्ण चरण है, जिसमें तार्किक चिंतन तथा समस्या समाधान जैसी उच्च स्तरीय मानसिक क्षमताएँ विकसित होती हैं। ये क्षमताएँ शैक्षिक उपलब्धि, निर्णय निर्माण तथा सामाजिक समायोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।विभिन्न सामाजिक व्यवहारों के अवलोकन सेे किशोर किशोरियों की समस्या समाधान योग्यता सीमित तार्किक चिंतन एवं निर्णयों पर आश्रित परिदृश्य दिखाई देता है इस पृष्ठ भूमि से मेरे मानस पटल पर ये शोध प्रश्न उत्पन्न होता है कि समाज के विभिन्न वर्गो के किशोर किशोरियों की शिक्षा में क्या दशा हैै ? उनके पास अपने विचार व्यक्त करने एवं समस्या समाधान के संदर्भ में जानकारी लेने का स्तर कैसा है ? उनकी समस्या समाधान योग्यता में कोई सहसम्बंध पाया जाता है? क्या भारतीय समाज में

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 1 January- March: 2026

उनके तार्किक चिंतन योग्यता में सहसम्बंध पाया जाता है ? क्या किशोर अपने विद्यालयी उपागमों से संतुष्ट है या नहीं? किशोर किशोरियों से समाज,तार्किक चिन्तन तथा समस्या समाधाना क्षमता की अपेक्षा रखता है। इस पृष्ठभूमि में भी यह उत्कृष्ठा उत्पन्न होती है कि भारतीय समाज से संदर्भित किशोर किशोरियों में तार्किक चिंतन की प्रवृति कैसी है ? क्या ग्रामीण क्षेत्र की अपेक्षा शहरीक्षेत्र के किशोर किशोरियों की तार्किक चिन्तन योग्यता व समस्या समाधान अधिक है अथवा नहीं? इन सभी प्रश्नों के समाधान की तलाश में शोधकत्ता ने ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के किशोर किशोरियों की समस्या समाधान योग्यता तथा तार्किक योग्यता का अध्ययन अनेक संदर्भों के अवलोकन पुनरावलोकन के बाद में रेखाकिंत किया गया।

शोध की आवश्यकता एवं महत्वः-

इस शोध की आवश्यकता एवं महत्व इस आधार पर है कि किशोरावस्था मे मानसिक, संवेगात्मक एवं शारीरिक विकास का एक महत्वपूर्ण चरण होता है। इस आयु में तार्किक चिंतन योग्यता और समस्या समाधान योग्यता का विकास व्यक्ति की शैक्षणिक उपलब्धियां, निर्णय निर्माण कौशल तथा जीवन में सफलता को अधिक प्रभावित करता है। वर्तमान की शिक्षा प्रणाली में प्रायः रटने पर अधिक बल दिया जाता है जबकि तार्किक चिंतन और समस्या समाधान पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया जाता है। ऐसे में किशोरों में इन दोनों योग्यताओं का तुलनात्मक एवं सहसम्बंधात्मक मनोवैज्ञानिक अध्ययन यह समझने में सहायक होगा कि तार्किक चिंतन और समस्या समाधान के बीच क्या सम्बंध है और कौन-कौन से कारक इनके विकास को प्रभावित करते हैं। इस शोध के निष्कर्ष शिक्षकों, अभिभावकों और शिक्षाविदों को शिक्षण विधियां, विद्यालय कांउसलिंग एवं अभिभावक मार्गदर्शन तथा शैक्षिक निति एवं पाठ्यक्रम विकास में सहायक होगा। ग्रामीण एवं शहरी किशोरों हेतु संज्ञानात्मक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के निर्माण में उपयोगी तथा भारतीय किशोर मनोविज्ञान साहित्य में योगदान देने में सहायक होगा।

समस्या कथन

किसी भी शोधकार्य के लिए समस्या कथन एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है। समस्या कथन एक सुस्पष्ट लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित करने का प्रयास करता है।

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 1 January- March: 2026

यह वह आधार है जो अनुसंधानकर्ता को एक निश्चित दिशा एवं लक्ष्य की ओर अग्रसर करता है क्योंकि इसका क्षेत्र व्यापक और विस्तृत होता है। समस्या कथन के बिना शोधकत्ता अपने शोध विषय से भटक सकते हैं व परिणाम प्राप्त करने में असफल हो सकते हैं। समस्या कथन हमारे अनुसंधान दायरे को एक निश्चित सीमा रेखा में कार्य करने के लिए बाधित करता है। अतः समस्या कथन अधिक स्पष्ट व प्रभावमयी होना चाहिए।

प्रस्तुत शोध का समस्या कथन है-

"ग्रामीण एवं शहरी किशोर-किशोरियों में तार्किक चिंतन योग्यता एवं समस्या समाधान योग्यता में सहसम्बंध का अध्ययन।"

तकनीकी शब्दों की व्याख्या:-

- **समस्या समाधान योग्यता:-**समस्या समाधान का अर्थ है कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करके अपने लक्ष्य को प्राप्त करना।
- **तार्किक चिन्तन योग्यता:-**तार्किक चिन्तन एक पूर्ण और जटिल मानसिक प्रक्रिया है, जो समस्या की उत्पति के समय आरम्भ होकर उसके समाधान के अन्त तक चलती है। प्रतिमाओं, प्रतीकों, सम्प्रत्ययों, नियमों एवं अन्य मध्यस्थ इकाईयों के मानसिक जोड़-तोड़ को चिन्तन कहा जाता है।
- **परिवेश:-**इसके अन्तर्गत ग्रामीण व शहरी परिवेश को शामिल किया गया है।
- **लिंग-**इसके अन्तर्गत किशोर व किशोरियों को सम्मिलित किया गया है।

शोध के उद्देश्य:-

- ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की समस्या समाधान योग्यता तथा तार्किक चिन्तन योग्यता के मध्य सहसम्बंध का अध्ययन करना।
- ग्रामीण एवं शहरी किशोरियों की समस्या समाधान योग्यता तथा तार्किक चिन्तन योग्यता के मध्य सहसम्बंध का अध्ययन करना।

शोध की परिकल्पनाएँ

- ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की समस्या समाधान योग्यता तथा तार्किक चिन्तन योग्यता के मध्य कोई सार्थक सम्बंध नही है।

- ग्रामीण एवं शहरी किशोरियों की समस्या समाधान योग्यता तथा तार्किक चिन्तन योग्यता के मध्य कोई सार्थक सम्बंध नही है।

शोध हेतु प्रयुक्त न्यादर्श -

प्रस्तुत शोध कार्य में अनुसंधान के लिए जनसंख्या विभिन्न विधालयों में अध्ययनरत छात्र व छात्राएँ है, जिनकी संख्या लाखों करोड़ो में है। इस सम्पूर्ण जनसंख्या पर शोध कार्य करना सम्भव नहीं हैं। अतः अध्ययन में धन, समय व साधनों की सीमित मात्रा के कारण शोधकत्र्ता ने अध्ययन हेतु अभिष्ट उद्देध्यों की प्राप्ति के लिए राजस्थान राज्य के हनुमानगढ़ जिले के ग्रामिण व शहरी क्षेत्रों से 600 किशोर-किशोरियों का चयन यादृच्छिक विधि से किया गया है। जिसमें से 300 ग्रामीण व 300 शहरी क्षेत्र से सम्बन्धित है।

शोध में प्रयुक्त उपकरणों का सामान्य परिचय -

अनुसंधान कर्ता ने निम्नलिखित उपकरणों का प्रयोग ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों से सम्बंधित किशोर-किशोरियों को दत्त संकलन हेतु किया गया।

1. तार्किक चिन्तन योग्यता- डाॅ. सुरजीत कुमार एवं डाॅ. शीखा तिवारी
2. समस्या समाधान योग्यता- एल. एन. दुब्बे

सांख्यिकीः-प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित सांख्यिकी विधियों का प्रयोग किया गया है-

1. मध्यमान 2. प्रमाप विचलन 3. कार्ल पियर्सन का सहसम्बंध।

विश्लेषण-आँकड़े संकलन के पश्चात उनके आधार पर परिमाप व निष्कर्ष तभी प्राप्त किये जा सकते हैं जब उनको सही तरीके से सारणीबद्ध व विश्लेषित किया जाये। इसलिए शोधकत्र्ता द्वारा संकलित आँकड़ों को इस प्रकार से विश्लेषित किया गया है-

परिकल्पना - 1

1. **ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की समस्या समाधान योग्यता तथा तार्किक चिन्तन योग्यता के मध्य कोई सार्थक सम्बंध नही है।**

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 1 January- March: 2026

सारणी संख्या-1.1

क्र.स.	चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	त. मूल्य	परिकल्पना	
1	समस्या समाधान	300	16.006	1.58	.087	.05	.01
2.	तार्किक चिन्तन	300	37.44	2.64		अस्वीकृत	स्वीकृत

उपरोक्त सारणी संख्या 1.13 में ग्रामीण एवं शहरी किशोरों की समस्या समाधान योग्यता तथा तार्किक चिन्तन योग्यता से सम्बन्धित आँकड़ों को विश्लेषित किया गया है, जिसमें 300 ग्रामीण क्षेत्र के किशोर व 300 शहरी क्षेत्रों के किशोर को शामिल किया गया है। जिसमें ग्रामीण व शहरी क्षेत्र की किशोर का समस्या समाधान योग्यता का मध्यमान 16.006 व तार्किक चिन्तन योग्यता का मध्यमान 37.44 प्राप्त हुआ तथा इनके मानक विचलन क्रमशः 1.58 तथा 2.64 प्राप्त हुए। इसके आधार पर इनका त-मूल्य ज्ञात करने पर यह 0.087 प्राप्त हुआ जो कि स्वातन्त्रय के अंश 598 के सार्थकता के स्तर 0.05 पर, जिसका सारणी मान 0.080 है, से अधिक है तथा सार्थकता के स्तर 0.01 पर प्राप्त सारणी मान 0.105 से भी कम है। अतः सार्थकता के स्तर 0.05 पर यह अस्वीकृत तथा 0.01 पर पर यह स्वीकृत हो जाती है। अतः परिणामस्वरूप यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण व शहरी किशोरों की समस्या समाधान योग्यता तथा तार्किक चिन्तन योग्यता में सार्थकता के स्तर 0.05 पर सार्थक सह-सम्बंध पाया गया है। परन्तु सार्थकता के स्तर 0.01 पर सार्थक सह-सम्बंध नही है। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण व शहरी किशोरों की समस्या समाधान योग्यता तथा तार्किक चिन्तन योग्यता के मध्य आंशिक सह-सम्बंध पाया पाया गया है।

परिकल्पना - 2

2. **ग्रामीण एवं शहरी किशोरियों की समस्या समाधान योग्यता तथा तार्किक चिन्तन योग्यता के मध्य कोई सार्थक सम्बंध नही है।**

क्र.स.	चर	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	त. मूल्य	परिकल्पना	
1	समस्या समाधान	300	16.72	1.44	.045	.05	.01
2.	तार्किक चिन्तन	300	37.75	2.57		अस्वीकृत	अस्वीकृत

THE STANFORD JOURNAL
AN INTERNATIONAL JOURNAL
THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 1 January- March: 2026

उपरोक्त सारणी संख्या 1.14 मे ग्रामीण एवं शहरी किशोरियों की समस्या समाधान योग्यता तथा तार्किक चिन्तन योग्यता से सम्बन्धित आँकड़ों को विश्लेषित किया गया है, जिसमें 300 ग्रामीण क्षेत्र की किशोरियां व 300 शहरी क्षेत्रों के किशोर को शामिल किया गया है। इनसे, सम्बन्धित प्रश्नावली को भरवाया गया तथा प्राप्त आँकड़ों को विश्लेषित किया गया, जिसमें ज्ञात हुआ है कि ग्रामीण व शहरी क्षेत्र की किशोर का समस्या समाधान योग्यता का मध्यमान 16.72 व तार्किक चिन्तन योग्यता का मध्यमान 37.75 प्राप्त हुआ तथा इनके मानक विचलन क्रमशः 1.44 तथा 2.57 प्राप्त हुए। इसके आधार पर इनका त-मूल्य ज्ञात करने पर यह 0.045 प्राप्त हुआ जो कि स्वातन्त्रय के अंश 598 के सार्थकता के स्तर 0.05 पर, जिसका सारणी मान 0.080 है, से कम है तथा सार्थकता के स्तर 0.01 पर प्राप्त सारणी मान 0.105 से भी कम है। अतः सार्थकता के दोनो स्तरों पर पर यह स्वीकृत हो जाती है। अतः परिणामस्वरूप यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण व शहरी किशोरियों की समस्या समाधान योग्यता तथा तार्किक चिन्तन योग्यता में सार्थक सह-सम्बंध नही है।

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि ग्रामीण व शहरी किशोरियों की समस्या समाधान योग्यता तथा तार्किक चिन्तन योग्यता के मध्य सार्थक सह-सम्बंध नही पाया पाया गया है।

प्रस्तुत शोध के निष्कर्षों के आधार पर इसका शैक्षिक सुझाव निम्नानुसार हैः-

अध्यापकों के लिए सुझाव

तार्किक चिंन्तन के लिए अध्यापक को कक्षा में विधार्थियों को प्रश्न पूछने के लिए पे्ररित करना चाहिए और छात्रांे से स्वयं भी तार्किक प्रश्न पूछने चाहिए जैस- यदि आपके कागज के हवाई जहाज के अन्तिम टूकडे पर वजन हो तो क्या होगा? इसके अतिरिक्त अखबार की वर्ग पहेली, अंतर खोजो, रास्ता खोजो, आदि का अभ्यास करवाना चाहिए जिससे विधार्थियांे में तार्किक चिंन्तन का विकास हो सके।

किशोर-किशोरियों में समस्या समाधान योग्यता को विकसित करने हेतू अध्यापकों को कक्षा में प्रेरणादायक वातावरण का निर्माण करना चाहिए। किशोरों में उत्तरदायित्व की भावना विकसित करनी होगी जैसे कि किशोरों को एक दिन की अध्यापक की भूमिका

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 1 January- March: 2026

देना, विधालय में छात्र सलाहकार बोर्ड की स्थापना करना जो विधालय में छोटे मोटे विषयांे पर अपना निर्णय दे सकें जैसे- दोपहर के भोजन का समय का विकल्प आदि।

अभिभावकांे के लिए सुझाव:-

मनोवैज्ञानिक शोध यह दर्शाते हैं कि पारिवारिक वातावरण का किशोरों की चिन्तन शैली पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अतः अभिभावकों को चाहिए कि वे घर में संवादात्मक एवं सहयोगात्मक वातावरण बनाये रखें। अभिभावकों को केवल अंकों पर ध्यान केंन्द्रित करने के बजाये समझ तथा समस्या समाधान योग्यता के विकास पर बल देना चाहिए। घर में सामाचार पत्र, पहेलियाँ, तर्क आधारित खेल एवं रचनात्मक गतिविधियाँ किशोरों की मानसिक क्षमता को विकसित करती है।

किशोर-किशोरियों के लिए शैक्षिक सुझाव:-

मनोवैज्ञानिक आधार पर यह आवश्यक है कि किशोर-किशोरियां स्वयं अपने बौधिक विकास में सक्रिय भूमिका निभाएँ। उन्हे अध्ययन के दौरान विषय की गहराई को समझने का प्रयास करना चाहिए। "क्यों" और "कैसें" जैसे प्रश्न पूछकर विश्लेषणात्मक दृटिकोण का विकास करना चाहिए।

भावी शोध हेतु सुझाव:-

1. प्रस्तुत शोध में ग्रामीण व शहरी किशोरांे को लिया गया है। आगामी शोध साक्षर व निरक्षर माता और पिता के बच्चों पर भी किया जा सकता है।
2. सामान्य वर्ग व अभिजात्य वर्ग के किशोरों की समस्या समाधान योग्यता, तार्किक चिन्तन योग्यता पर तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
3. शोध हेतु विद्यालय का वातावरण तथा पारिवारिक वातावरण के प्रभाव विषय पर किया जा सकता है।
4. अनाथालय व पारिवारिक वातावरण में रहने वाले किशोरांे पर शोध किया सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डाॅ. मंगल अंशु "शैक्षिक अनुसंधान की विधियां" समक विश्लेषण एवं शैक्षिक सांख्यिकी राधा प्रकाश मंदिर, आगरा।

THE STANFORD JOURNAL ISSN: 3048-8923
(AN INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH) IJIN VALUE/
IMPACT FACTOR : 8.3
Volume–3, Issues– 1 January- March: 2026

2. डाॅ. रायजादा बी. एस. -"शिक्षा में अनुसंधान के आवश्यक तत्व" राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी जयपुर।

3. डाॅ. माथुर एस. एस. "शिक्षा मनोविज्ञान" विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।

4. डाॅ. पाठक पी.डी. "शिक्षा मनोविज्ञान" अग्रवाल पब्लिकेशन जयपुर।

5. भाई जीत योगेन्द्र "शिक्षा मनोविज्ञान" अग्रवाल पब्लिकेशन जयपुर।